महान अन्तर

जागो अब अज्ञान नींद से, खोलो आँखें, कान
महान अन्तर शिव, शंकर का, आओ अब लें जान

जैसे मोहनदास कर्मचंद, अलग-अलग दो नाम
एक बाप और दूजा बच्चे, गांधीजी का नाम

शिव और शंकर एक कहना, ये केवल अनुमान
शिव है रचता, शंकर रचना, ये है सच्चा ज्ञान

शिव बाबा और शिवरात्रि ही, क्यों कहते सब लोग
शिवशंकर रात्रि शब्द का, कहीं नहीं उपयोग

निराकार शिव परमपिता है, शंकर का आकार
शिव को अपनी देह नहीं, वो विराट रचनाकार

शिव है परमधाम का वासी, शंकर सूक्ष्म वतन
रूप तपस्वी शंकर का, नहीं शिव का अपना तन

दिखलाते शंकर खुद करता, परमपिता का ध्यान
यादगार शिवलिंग भक्ति में, देते हैं पहचान

विनाशकारी देव है शंकर, शिव है सबका बाप
ओम नमः शिवाय कहकर, करते शिव का जाप

ब्रह्मा, विष्णु, शंकर देवता नमः, कहे सब लोग
शिव परमात्मा शब्द का, करते हैं सभी प्रयोग

शिव सबका कल्याणकारी, शंकर विनाशकारी
चारों धाम, और ज्योतिर्लिंगम्, शिव की पूजा भारी

ब्रह्मा, विष्णु, शंकर रचना है, त्रिमूर्ती शिव भगवान
बाबा, बाबा कह नहीं करते, शंकर का गुणगान

विचित्र शिव, चित्रधारी शंकर, तपस्वी रूप महान
पारब्रह्म परमेश्वर शिव को, कहते हैं भगवान

सांप गले में शंकर करता, वश में पांच विकार
जन्म नहीं लेता है गर्भ से, शिव है निर्विकार

अवतरित हो ब्रह्मा तन शिव, देते निज पहचान
स्वयंभू, शिव को कहते, शंकर का नहीं बखान

ब्र.कु. सत्यनारायण (टोली विभाग)
ज्ञानसरोवर, आबू पर्वत